REET 2025
LEVEL-2
ROJGAR ANKIT
वंदन बैच
राज इतिहास एवं कला संस्कृति
चौहान राजवंश
LIVE
06-02-2025 08:00 PM

चौहान वंश

- मेरूतुंग के ग्रंथ प्रबन्ध चिन्तामणी के अनुसार गुरु विशिष्ठ ने माउण्ट आबू में यज्ञ किया जिससे चार राजपूत योद्धा पैदा किया
- प्रतिहार
- परमार
- चालुक्य (सौलंकी)
- चौहान
- अग्निकुण्ड सिद्धान्त
- पृथ्वीराज रासौ में-चन्दबरदाई
- **राज्य कवि-** सूर्यमल्ल मिश्रण ने भी समर्थन किया
- राजपूताने का अबुल फजल मुहणौत नैणसी ने भी
- समर्थन किया।

प → परमार
प → प्रतिहार
च → चालुक्य|सोलंकी
च → चौहान

सूर्यवंशी

य - य → सूर्यवंशी

- पृथ्वीराज विजय- जयानक
- हम्मीर महाकाव्य-नयनचन्दसूरी सूर्यवंशी बताया
- हम्मीर रासो- जौधराज
- सुर्जन चरित्र- चन्द्र शेखर
- बेदला शिलालेख
- गौरीशंकर हीराचंद औझा- सूर्यवंशी बताया

ब्राह्मण वंशीय

- दशरथ शर्मा, गोपीनाथ शर्मा
- बिजौलिया शिलालेख
- दशरथ शर्मा की पुस्तक
- द अर्ली चौहान डायनेस्टिज
- विदेशियों की संतान
- कर्नल जैम्स टॉड
- शक, सिथीयन, हुणों की संतान बताया
- **समर्थन-** स्मिथ, कनिंघम, भण्डारकर
- कुषाणों की संतान कनिंघम

चन्द्रवंशी

- हांसी अभिलेख
- अचलेश्वर अभिलेख
- भण्डाकर ने चौहानों को प्रारम्भ में गुर्जर प्रतिहार के सामन्त बताया
- हम्मीर महाकाव्य और सुर्जन चरित्र में चौहानों की जन्मभूमि पुष्कर माना गया
- हर्षनाथ अभिलेख में चौहानों की राजधानी अन्नतपुर सीकर मानी गई है।

चौहान

- जांगल प्रदेश का पूर्वी भाग सपादलक्ष के नाम से जाना जाता है।
- सपादलक्ष के चौहानों की राजधानी - अहिच्छत्रपुर नागौर
- चौहानों की जन्म भूमि- पुष्कर
- चौहानों को अजमेर के चौहान, साम्भर के चौहान, शाकम्भरी के चौहान, सपादलक्ष के चौहान के नाम से जाना जाता है।
- अजमेर के चौहानों की कुल देवी - शाकम्भरी माता
- कुल देवता- हर्षनाथ जी सीकर। गण भैरव के रूप में पूजा।

वासुदेव चोहान

- चौहान वंश की नींव 551 ई. में रखी
- वासुदेव चौहान की चौहानों का आदि पुरुष मूल पुरूष संस्थापक माना जाता है।
- सांभर झील का निर्माण वासुदेव चौहान ने करवाया
- बिजौलिया शिलालेख के अनुसार चौहानों का आदिपुरुष वासुदेव को माना है।
- साम्भर झील भारत की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की झील
- 1170 ई. में सोमेश्वर चौहान के समय बिजौलिया शिलालेख गुणभद्र सूरी लिखा गया।
- उत्कीर्णकर्ता - गोविंद
- निर्माता - जैन श्रावक लोलक

मिलते है

- उपनाम - विज्यावल्ली, उत्माद्री, अहिछत्रपुर, श्रीमाल, जबालीपुर, शाकम्बरी की जानकारी मिलती है।
- दुलर्भराज के समय सर्वप्रथम मुस्लिम ऑक्रमण हुए।
- गुवक प्रथम सीकर जिले में हर्षनाथ के मंदिर का निर्माण करवाया
- नागभट्ट द्वितीय ने गुवक प्रथम को वीर राजा की उपाधि दी
- अपने गुरू जझक की बेटी जाबाली का विवाह गुवक प्रथम से करवाया।
- गुवक प्रथम ने हर्षराय की उपाधि धारण की।
- विग्रहराज द्वितीय- चालुक्य शासक मूलराज प्रथम को पराजित किया
- भडोंच में आसापुरा माता का मन्दिर बनवाया।
- वाक्पतिराज इसे 108 युद्धों का विजेता माना जाता
- इसी के पुत्र लक्ष्मण ने नाडौल के चौहान राजवंश की नींव रखी।

अजयपाल

- अजयपाल ने 7 वीं शताब्दी में अजयमेरू दुर्ग का निर्माण करवाया।
- 1113 ई. इस दुर्ग का पुन: निर्माण अजयराज ने करवाया।
- हरविलास शारदा ने इसे प्रथम गिरी दुर्ग बताया।
- अन्य इतिहासकारों के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण अजयराज ने करवाया 1113 ई. में
- नोट - राजस्थान अध्ययन के अनुसार अजयपाल या अजयराज एक ही राजा है।

- यह दुर्ग बिठड़ी की पहाड़ी पर स्थित होने के कारण गढबिठली के नाम से जाना जाता है।
- पृथ्वीराज सिसोदिया ने अपनी पत्नि तारा के नाम पर तारागढ़ रखा।
- इस दुर्ग को अरावली का अरमान, राजपुताने की कुंजी, राजस्थान का जिब्राल्टर, पूर्व का दूसरा जिब्राल्टर के नाम से जाना है।
- सर्वाधिक स्थानीय आक्रमण सहने वाला किला- तारागढ़
- इस दुर्ग में घोड़े की मजार, मीरान साहब की दरगाह, रूठीरानी की छतरी, पृथ्वीराज का स्मारक स्थित है।

अजयराज

- अजयराज ने 1113 ई. में अजमेर नगर बसाया अजमेर की राजधानी बनाया।
- अजमेर को राजस्थान की हृदय
- अन्डों की टोकरी
- भारत का मक्का
- राजपुताने की कुंजी
- राष्ट्रीय राजमार्गों का चौराहा कहा जाता है।
- अजयराज ने मालवा के शासक नरवर्मन को हराया।
- अजयराज ने अजयप्रिय तथा द्रुम सिक्के चलाये।
- अपनी पत्नी सोमलावती नाम के सिक्के चलाये।

अर्णोराज 1133-1150

- राज्यभिषेक 1133 ई. अजमेर में हुआ।
- अर्णोराज ने अजमेर में अनासागर झील का निर्माण करवाया।
- बिजौलिया शिलालेख के अनुसार इस झील का निर्माण, 1133-1137 के मध्य हुआ।
- पृथ्वीराज़ रासौ के अनुसार झील का निर्माण 1135-1137 के मध्य हुआ।
- इस झील के किनारे मुगल शासक जहांगीर (सलीम) ने दौलत बाग बनवाया।
- वर्तमान में सुभाष उद्यान के नाम से जाना जाता है।
- इस उद्यान में नूरजहां (जहांगीर की पत्नी) की माँ, असमत बैगम ने गुलाब के इत्र का आविष्कार किया।
- इस इत्र को जहांगीरी ए रोगन कहा जाता है।

- नूरजहां का मूल नाम मैहरूनिशा था।
- इस झील के किनारे मीरा उद्यान, चश्मा-ए-नूर नामक झरना तथा रूठी रानी का महल स्थित है।
- जोधपुर का नूरजहां- गुलाबराय
- मुगल शासक शाहजहां ने इस झील के किनारे संगमरमर से निर्मित "बारह दरियों" का निर्माण करवाया
- चौहानों को पितृहन्ता- जगदेव
- अर्णोराज शैव धर्म का उपासक था।
- अर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण करवाया जिसे जंहागीर ने तुड़वाकर पुष्कर में डलवा दिए।
- चालुक्य राजा जयसिंह ने अपनी पुत्री कांचन देवी का विवाह अर्णोराज से किया।
- कांचन देवी से उत्पन्न सन्तान- सौमेश्वर चौहान

विग्रहराज चतुर्थ 1153-1163 | बिसलदेव

- कला व साहित्य की दृष्टि से चौहानों में स्वर्ण काल
- विग्रहराज चतुर्थ का काल था।
- विग्रहराज चतुर्थ को बिसलदेव के नाम से भी जाना जाता है।
- शिवालिक अभिलेख (टोपरा अभिलेख) बिसलदेव को विष्णु का अवतार माना गया है।
- कवियों व विद्वानों को आश्रय देने के कारण-कविबांधव
- कविबांधव की उपाधी जयानक ने दी।
- किलहोर्न ने लिखा है कि विग्रहराज चतुर्थ कालीदास और भवभूती की भी होड़ कर सकता है।

- दिल्ली पर अधिकार करने वाला तौमरो को पराजित करने वाला पहला शासक विग्रहराज चतुर्थ
- गजनी शासक अमीर खुसरूशाह को पराजित किया।
- बिसलदेव रासो नरपति नाल्ह ने लिखा।
- ललित विग्रहराज - कवि सोमदेव ने लिखा।
- इसमें इन्द्रपुरी की राजकुमारी देसलदे का वर्णन है।
- हरिकैली नाटक की रचना विग्रहराज चतुर्थ ने की।
- यह संस्कृत भाषा में है इसकी कुछ लाइनें ढाई दिन के
- झौंपड़े पर तथा कुछ लाइनें ब्रिस्टल इंग्लैण्ड में राजा राममोहन राय के स्मारक पर उत्कीर्ण है।
- 1153 ई. में संस्कृत पाठशाला का निर्माण करवाया अजमेर में।

- इस पाठशाला को सरस्वती मंदिर, कण्ठभरण वाणी के नाम से भी जाना जाता है
- 1193 ई. में गुलाम वंश के शासक कुतुबुद्दीन ऐबक ने पाठशाला को तुड़वाकर मस्जिद का निर्माण करवाया।
- राजस्थान की प्रथग मस्जिद इसे ही माना जाता है।
- राजस्थान में प्रथमत: फारसी अभिलेख अजमेर में ही मिले है।
- यहां पर पंजाब पीरशाह का ढाई दिन का उर्स लगने के कारण यह ढ़ाई दिन का झौंपड़ा कहलाया।
- यह झौपड़ा 16 खम्भे युक्त है। इसे 16 खम्भों का महल भी कहा जाता है।
- इसका शिल्पी अबु बकर था।
- कर्नल टॉड ने इसके बारे में कहा "मैंने आज तक इतनी प्राचीन और सुरक्षित इमारत कहीं नहीं देखी"।

सोमेश्वर चौहान

- इनके समय 1170 ई. में बिजोलिया शिलालेख लिखा गया।
- सोमेश्वर चौहान ने आबू शासक जैत्रसिंह का साथ दिया।
- जिसके कारण चालुक्य शासक भीमदेव द्वितीय ने सोमेश्वर चौहान की हत्या कर दी।

पृथ्वीराज चौहान तृतीय 1177-1192

- जन्मः- 1166 ई. में अन्हिलपाटन् गुजरात में।
- पिता का नाम - सोमेश्वर चौहान।
- माता का नाम- कर्पूरी देवी। संरक्षिका
- राज्य का संचालन- कंदबवास ने किया।
- सेनाध्यक्ष - भुवनमल
- घोड़े का नाम – नाट्यरम्भा

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय के समकालीन राजा-
- **गुजरात**- चालुक्य नरेश भीमदेव द्वितीय
- **कन्नौज** - गहड़वाल, शासक जयचन्द
- **बुन्देलखण्ड** - चन्देल शासक परमार्दिदेव

most → संयोगिता

उपाधि

- राय पिथौरा- युद्ध में पीठ न दिखाने वाला।
- दल पुंगल- विश्व विजेता
- हिन्दु सम्राट, हिन्दु सपालदेश्वर
- 1184 में भीम देव द्वितीय को पराजित किया।
- 1182 ई. में अपने चचेरे भाई नागार्जुन को पराजित किया।
- 1182 ई. में भण्डनायकों को पराजित किया।
- सतलज नदी के पार आने वाली एक जाति थी भण्डनायक ।

- 1182 ई. में बुन्देलखण्ड के राजा परमारार्दीदेव व उसके सैनिक आल्हा व उदल को पराजित किया व महौबा पर विजय प्राप्त की।
- यहाँ का प्रशासक्त पुन्जराय का नियुक्त किया।
- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अनुसार चौहान तृतीय ने
- 1182 ई. में आक्रमण किया तथा महोबा पर विजय प्राप्त की।
- 1184 ई. में कन्नोज के गहड़वाल वंश के राजा जयचन्द को पराजित कर उसकी पुत्री संयोगिता से विवाह किया।

तराईन का प्रथम युद्ध- 1191

- (स्थान जिला करनाल हरियाणा)
- मोहम्मद गौरी ने तबर-ए-हिन्द का का प्रशासक प्रशासक काजी जियाउदीन को नियुक्त कर रखा था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय के सिहाबुद्दीन मौहम्मद गौरी को पराजित किया।

तराईन का दूसरा युद्ध- 1192 ई.

- इस युद्ध में मौहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय को पराजित किया।
- इस युद्ध में चौहान तृतीय का सेनापति खाण्डेराव था।
- विश्वासघात करने वाले सौमेश्वर व प्रताप सिंह था।
- इस युद्ध में चौहान तृतीय का सेनापति उदयराज सही समय पर सेना लेकर नहीं पहुंच पाया।
- इस युद्ध के बाद उत्तरी भारत में राजपूत काल का अंत व सल्तनत काल का उदय हुआ।

दरबारी कवि व विद्वान

- चन्दबरदाई पृथ्वीराज रासो पिंगल भाषा में ग्रन्थ लिखा।
- जयानक- पृथ्वीराज विजय इस ग्रन्थ में तराईन युद्ध का वर्णन नहीं है।
- यह ग्रन्थ पुष्कर झील के किनारे बैठकर लिखा,
- अन्य विद्वान- विश्वरूप, विद्यापति गौड़, वागीश्वर जनार्दन, आशाधर
- पुस्तकालय अध्यक्ष पद्मनाथ
- चौहान्त तृतीय के समय प्रथम शिलालेख बेदला में अंतिम अवलन्दा शिलालेख है।

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह

- 1192 ई. में मोहम्मद गौरी के साथ भारत आये।
- उस भारत का शासक पृथ्वीराज चौहान तृतीय जन्म 1143 ई. संजरी फारस अफगानिस्तान में हुआ।
- चिश्ती सम्प्रदाय के संस्थापक- ख्वाजा मुइनुद्दीन
- चिश्ती
- शब्दावली
- उत्तराधिकारी :- वली

- थान :- खानकाह
- गुरू :- पीर
- शिष्य :- मूरीद। यात्रियों को जायरीन
- ख्वाजा साहब के गुरू का नाम: शैख उस्मान हारूनी।
- ख्वाजा साहब को मौहम्मद गौरी ने:- सुल्तान उल हिन्द की उपाधि दी।
- चिश्ती सन्तों ने आफताब-ए-हिन्द कहा
- ख्वाजा साहब ने अपनी कर्मभुमि अजमेर को चुना।
- इस दरगाह का प्रमुख दरवाजा बुलन्द दरवाजा है जो 75 फीट ऊँचा है।

- ख्वाजा साहब का प्रमुख ग्रंथ कुंजल इसरार
- ख्वाजा साहब की दरगाह का निर्माण- इलतुत्मिश ने करवाया।
- ख्वाजा साहब का उर्स 1 रज्जब से 6 रज्जब तक।
- ख्वाजा साहब के उर्स का उद्घाटन भीलवाड़ा का गौरी परिवार करता है।
- इनकी दरगाह पर आने वाला प्रथम सुल्तान मौहम्मद बिन तुगलक ।
- चिश्ती संप्रदाय के लोकप्रिय संत फरीद (पंजाब भाषा के प्रथम कवि)

रणथम्भौर के चौहान

- कुतुबद्दीन ऐबक ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय के पुत्र गोविन्द देव चौहान को रणथम्भौर जागीर प्रदान की।
- रणथम्भौर के चौहान वंश का संस्थापक गौविन्द देव चौहान (1194)
- भागभट्ट के समय रज्जीया सुल्तान ने रणथम्भौर पर असफल आक्रमण किया।

हम्मीर देव चौहान 1282-1301

- रणथम्भौर के चौहान वंश का प्रतापी शासक था।
- **पिता-** जैत्र सिंह
- **दरबारी कवि-** बिजाद्बीत्या
- **गुरु-** राघवाचार्य
- **1291-92** में खिलजी वंश के शासक जलालुद्दीन खिलजी ने असफल आक्रमण किया।
- जलालुद्दीन खिलजी ने किले के बारे में कहा "ऐसे 100 किले मैं मुस्लमान की दाड़ी के एक बाल के बराबर समझता हूँ।"
- यह कथन अपने सेनापति मलिक अहमद चाप से कहे।
- रणथम्भौर दुर्ग की कुन्जी- झाईन दुर्ग।

- खिलजी के आक्रमण करने का कारण हम्मीर द्वारा
- मगौल सेनापति मौहम्मद शाह व कैहब्रु को शरण देना
- मीर मोहम्मद शाह व चिमना को हम्मीरदेव ने जगाना की जागीर दी।
- मीर मोहम्मद शाह व कहब्रु तथा उलुग खां व नुसरत खां के बीच धन के बंटवारे को लेकर विवाद व हम्मीर द्वारा मीर मोहम्मद शाह को शरण देना।
- हम्मीर देव चौहान द्वारा जल्लालुदीन खिलजी को कर न देना।
- साम्राज्य विस्तारवादी नीति-
- रणथम्भौर का पहला शाका- 1301 ई.
- राजस्थान का पहला शाका व एकमात्र जल जौहर।
- केसरिया - हम्मीर देव चौहान
- जौहर - रंगा देवी व पुत्री पद्मला ने जौहर किया।

रणमल | रतिपाल

- इस युद्ध मे विजय के बाद अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी कवि व इतिहासकार अमीर खुसरों ने इस दुर्ग के बारे में कहा- "आज कुफ्र का गढ़ ईस्लाम का घर हो गया।
- अमीर खुसरो का दूरारा कथन "राजपूतों को सौने के दो दानों के बदले ~~चावल~~ अनाज का दाना तक नसीब नहीं हुआ।"
- उलुग खां ने झाईन दुर्ग को जीतकर इसका नाम नौशहर रखा।
- इस दुर्ग में गुरदास सैनी मारा गया।
- अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति नुसरत खां युद्ध मे मारा गया।
- उलुग खां रणथम्भौर का प्रशासक नियुक्त किया।
- अन्य सेनापति अलप खां था।
- हम्मीर देव चौहान का साथ देने वाले सेनापति-

धर्मसिंह-भीमसिंह

- अलाउदीन खिलजी को भड़काने वाला भौजराज सैनापति
- हम्मीर देव के हार का कारण रणमल व रतिपाल का विश्वासघात
- अलाउद्दीन खिलजी ने रणमल व रतिपाल को रणथम्भौर का परगना देने का लालच दिया।
- हम्मीर देव ने अपने जीवन मे कुल 17 युद्ध किये, 16 युद्ध जीत गया एकमात्र युद्ध हारा 11 जुलाई 1301 रणथम्भौर दुर्ग- एकमात्र दुर्ग जो सात पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
- एकमात्र दुर्ग जो अण्डाकार आकृति का है।

- अण्डाकार कब्र, कालीबंगा सभ्यता में मिली है।
- एकमात्र दुर्ग जो विंध्याचल और अरावली की पहाड़ियों से घिरा है।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा कि "अन्य सभी दुर्ग नगें है यह बख्तरबन्द है।"
- इस दुर्ग में नौलखा दरवाजा, फतेह पौल, सूरज पौल, गणैश पौल दरवाजे स्थित है।
- इस दुर्ग में पीर सदरूद्दीन की दरगाह, हम्मीर की कचहरी, जौरा-भौरा महल, बादल महल, रनिहाड़ तालाब, त्रिनेत्र गणेश मंदिर, जोगी महल, हम्मीर महल स्थित है।

"सिंघगमन सत्पुरूष वचन, कदली फले इक बार।"

"तिरियों तैल हम्मीर हठ चढे न दूजी बार।"

- इस दुर्ग पर गुजरात शासक बहादुर सिंह का अधिकार रहा।
- सुरी शासक शेरशाह सुरी ने इस दुर्ग का दुर्गाध्यक्ष आदिल शाह को बनाया।

- हम्मीर महाकाव्य- नयन चंद्रसुरी
- हम्मीर रासौ जौधराज
- हम्मीर हठ- चन्द्रशेखर, हम्मीर मद मर्दन-जयसिंह सुरी
- हम्मीरायण-भाण्ड व्यास / गौडऊ व्यास
- हम्मीर मद मर्दन-जय सिंह सुटी
- हम्मीर बन्धन-अमृत कैलाश

हम्मीर राछडा → राजरूप

most

नाडौल के चौहान

- संस्थापक- लक्ष्मण देव चौहान 960ई. मे
- लक्ष्मण का अवतार- पाबूजी
- शेषनाग का अवतार कल्लाजी राठौड़
- शाकम्भरी के चौहानों से अलग होने वाली शाखा नाडोल
- प्रतापी राजा कीर्तिपाल चौहान था जिसने नाडौल शाखा का जालौर शाखा में विलय किया।
- कीर्तिपाल चौहान को मुहणौत नैणसी ने कीतु एक महान राजा कहा है।

जालौर का चौहान

- जालौर के चौहान वंश का संस्थापक कीर्तिपाल चौहान
- कीर्तिपाल चौहान ने नाडोल शाखा का जालौर शाखा मे विलय किया।
- कीर्तिपाल चौहान ने सौनगढ की पहाड़ी पर जालौर दुर्ग की नींव रखी।
- डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम ने करवाया।
- यह दुर्ग जालोर मे सुकड़ी नदी के किनारे स्थित है। (सुकड़ी नदी किनारे बांकली बान्ध बना हुआ है।)
- उपनाम सुवर्णगिरि, सोनगिरी, कनकांचल, कांचनगिरी, जलालाबाद, जालन्धर नाथ की तपोभूमि, जालन्धर दुर्ग

- राजस्थान का जालंधर जालौर को कहा जाता है।
- हसन निजामी ने अपने ग्रन्थ ताज-उल-मासिर कहा- आज तक कोई भी आक्रमणकारी दरवाजे से प्रवेश करके नहीं जीत पाया"
- जालौर दुर्ग के प्रति कहावत- रातों रात राइयों के भाव विका दुर्ग।
- इस दुर्ग में परमारकालीन कीर्तिस्तम्भ, जौगमाया का मन्दिर, चामुण्डा माता का मन्दिर, अलाउद्दीन खिलजी की मस्जिद फिरौजा की मस्जिद ।
- अल्लाउदीन खिलजी ने संस्कृत पाठशाला को तुड़वाकर मस्जिद का निर्माण करवाया
- समर सिंह- इन्होंने अपनी पुत्री लीलादेवी का विवाह गुजरात शासक भीमदेव द्वितीय के साथ किया।

उदयसिंह चौहान 1205-1257

- उदयसिंह के समय गुलाम वंश के शासक इल्तुतमिश ने असफल आक्रमण किया।
- उदयसिंह ने अपनी पौत्री चाचिंगदे / रूपादे का विवाह मेवाड़ शासक जैत्र सिंह के पुत्र तैज सिंह से किया।
- उदयसिंह चौहान की छत्तरी भीनमाल जालौर में स्थित है।
- चाचिंग देव- इस शासक के समय कोई भी मुस्लिम आक्रमण नहीं हुआ।
- सामन्त सिंह- इसके समय बलबन ने नूर मौहम्मद नामक सेनापति को भेजकर असफल आक्रमण किया।
- 1305 ई. मे सामन्त ने अपने पुत्र कान्हड़देव चौहान को शासक बना दिया, जो जालौर के चौहान वंश का प्रतापी राजा बना।

कान्हड़देव चौहान 1305-1311

- जालौर का प्रतापी राजा
- अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण करने के कारण
- विरमदेव चौहान का फिरौजा से विवाह न करना
- फरिश्ता के अनुसार भरे दरबार में कान्हड़देव चौहान का अल्लाउदीन खिलजी द्वारा अपमानित करना।
- मुहणौत नैणसी के अनुसार कान्हड़देव चौहान के पुत्र विरमदेव चौहान का अल्लाउदीन खिलजी की पुत्री फिरोजा के साथ विवाह न करना
- कान्हड़देव व प्रबंध व वीरमदेव सोनगरा री बांता-पदम्नाभ।

- इसके अनुसार 1298 में अल्लाउदीन खिलजी के सेनापति
- नुसरत खां व उलुग खां जो सोमनाथ मंदिर गुजरात को लूटकर आ रहे थे तो कान्हड़देव चौहान के सेनापति जैता देवड़ा ने इनको लूटा था।
- खिलजी की सम्राज्य विस्तार नीति
- जालौर दुर्ग की कुन्जी सिवाणा दुर्ग, बालोतरा (पूर्व में बाड़मेर)

सिवाणा दुर्ग पर आक्रमण- 1308 ई → सिवाणा का पहला साका

- सिवाणा दुर्ग का विश्वासघाती भावला पंवार
- भाण्डेलाव तालाब में गौ रक्त मिलाया
- केसरीया- सातलदेव व सौमदेव चौहान ने
- जौहर - मेणादे के नेतृत्व
- अल्लाउदीन खिलजी का सिवाणा दुर्ग में नाहरखां
- नामक सैनापति मारा गया।
- अमीर खुसरो ने सिवाणा दुर्ग को फतह करने के बाद कहा "वो गजब के राजपूत वहादुर जाति के लोग थे जो सिर कलम होने के बाद भी युद्ध में डटे रहे।"
- खिलजी ने इस दुर्ग को जीतकर इसका नाग- खेराबाद रखा।
- सिवाणा दुर्ग का: प्रशासक कमालुद्दीन गुर्ग को नियुक्त किया।

जालौर का शाका 1311-1312

- कैसरीया- कान्हड़देव, विरमदेव चौहान
- जौहर - जैतल दे ने
- जालौर दुर्ग मे विश्वासघाती - दहिया बीका
- दहीया बीका की पत्नी क्षत्रिया हीरा दे ने कान्हड़देव चौहान को अल्लाउदीन खिलजी के आक्रमण की सूचना दी थी।
- खिलजी ने इस दुर्ग को जीतकर जलालाबाद नाम रखा।